सुनियोजित कार्यक्रम योजना और विश्लेषण द्वारा बुनियादी स्तर के बच्चों में चिंतन कौशल का विकास

रोमिला भटनागर*

छोटे बच्चों द्वारा योजना बनाना और उस पर विचार रखना, साथियों के साथ निर्णय लेना और समस्या को मिल-जुलकर हल करना, यह सब छोटे समूह में खेल-खेल में शिक्षक बड़ी आसानी से सिखा सकते हैं। इनसे बच्चों में निर्णय लेने के कौशल का विकास होता है और साथ ही स्व-नियंत्रण की भावना के लिए वे प्रोत्साहित होते हैं। छोटे-छोटे क्रियाकलापों व खेलों की योजना और विश्लेषण करने से बच्चों में सोचने का कौशल, समस्या सुलझाना और बातचीत करने के कौशल विकसित होते हैं। यह लेख बुनियादी चरण पर कार्य कर रहे शिक्षकों को समझ देगा कि बच्चों को योजना बनाने की प्रक्रिया से कैसे जोड़ा जा सकता है।

तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चे अपने आस-पास के परिवेश के बारे में जानने की उत्सुकता रखते हैं। वे अपनी इच्छाओं, अतीत और भविष्य की मानसिक छवियों को बनाने और अपने तथा दूसरों के व्यवहार को समझने की पूरी परख रखते हैं। आवश्यकता होती है सिर्फ़ उन्हें एक सुनियोजित पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करने की। हालाँकि, आज के पूर्व-प्राथमिक शिक्षक अक्सर बढ़ती हुई शैक्षणिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पठन कौशल व गणित कौशल पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन हमें बच्चों की व्यापक सोच व क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए भी प्रतिबद्ध रहना चाहिए। यही वह आधार स्तंभ हैं जिनसे बच्चे निर्णय लेना, अपना व्यवहार नियंत्रित करना, जटिल चुनौतियों का सामना करना और अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी लेना सीखते हैं।

छोटे बच्चों को चिंतन करने, पूर्वानुमान करने, प्रश्न करने और परिकल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह भी जानना आवश्यक है कि बच्चों को इन क्षमताओं का अभ्यास कराने में व्यस्क व्यक्ति कैसे सहायक हो सकते हैं। 'योजना' और 'विश्लेषण' दोनों ही विचारशील माध्यम हैं, जो बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि वह क्या कर रहें हैं और

**सह-आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110 016

क्या सीख रहें हैं। वे अन्य शैक्षणिक, सामाजिक और कलात्मक गुणों की विस्तृत श्रेणी को भी प्रोत्साहित करते हैं। इस लेख में लेखिका द्वारा कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें शिक्षक व बच्चों की देखभाल करने वाले अपने कार्यक्रमों में उपयोग कर सकते हैं।

सबसे पहले हमें उन वास्तविक विकल्पों में अंतर करना चाहिए जिनमें शिक्षक उन्हें कई विकल्प प्रदान करते हैं, जैसे— अपनी पेंटिंग में किन-किन रंगों का प्रयोग करना चाहोगे। शिक्षक बच्चों को सीमित संख्या में व्यस्क द्वारा चयनित विकल्पों के लिए निर्देशित करते हैं, जैसे क्या आप लाल या नीले रंग का प्रयोग करना चाहेंगे, लेकिन योजना बनाना बिना किसी निर्धारित सीमा वाले विकल्पों में से चयन करने से ज़्यादा उपयोगी होता है। जब हम बच्चों को योजना में शामिल करते हैं, तब हम उन्हें अपने लक्ष्यों की पहचान करने और उन्हें प्राप्त करने के विकल्पों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, वे विचार कर सकते हैं कि वे क्या करेंगें, किन सामग्रियों का प्रयोग करेंगे, किन के साथ करेंगें, उन्हें कितना समय लगेगा और क्या उन्हें मदद की आवश्यकता होगी। इस प्रकार नियोजन में प्रक्रिया पर निर्णय लेना और पारस्परिक विचार-विमर्श का पूर्वानुमान लगाना, समस्याओं को पहचानना और समाधानों का प्रस्ताव रखना और पहचानना और प्रतिक्रियाओं की पहले से सोच रखना शामिल हैं।

अधिकांश पूर्व-प्राथमिक विशेषज्ञ छोटे बच्चों में '*स्मृति कौशल*' विकसित करने के महत्व को समझते हैं। शिक्षक बच्चों को दिन में पहले सीखी किसी बात को या सप्ताह के शुरू में हुई किसी घटना को यादकर बताने को कह सकते हैं। बच्चों के विचार हमेशा ही स्मृति या संपूर्ण गतिविधियों को रटकर याद करने से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

जब हम बच्चों को विश्लेषण या विचार-विमर्श करने में शामिल कर लेते हैं, तो हम उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, जैसे कि उन्होंने क्या किया है, वे उसके बारे में विस्तार से बताएँ। हम उन्हें इस बात से अवगत कराने में भी मदद करते हैं कि वे कोई भी खेल-गतिविधि आदि के बारे में क्या महसूस करते हैं, वे अपने अनुभव को बनाने या बढ़ाने के लिए क्या कर सकते हैं आदि। बच्चों के इस विश्लेषित ज्ञान को संगठित करना है, ताकि उन्हें अन्य परिस्थितियों के लिए तैयार किया जा सके। जिससे आगे के लिए पूर्वानुमान और मूल्यांकन किया जा सके। इस प्रकार योजना और विश्लेषण, जब वे सक्रिय शिक्षण-अधिगम को शामिल करते हैं, तो गहन विचार और विचारपूर्ण अनुप्रयोग के चल रहे चक्र का हिस्सा होते हैं।

सहायक शोध योजना एवं विश्लेषण घटकों के बारे में क्या कहते हैं?

अनेक शोधकार्यों ने योजना और विश्लेषण के महत्व को स्थापित करने वाले साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में योजना और विश्लेषण का विशेष महत्व है। जिन बच्चों को अपनी गतिविधियों पर योजना और विश्लेषण करने के अधिक अवसर दिए जाते हैं, उनकी भाषा, सामाजिक कौशल और भावनात्मकता का विकास अधिक होता है। अनौपचारिक तौर पर शिक्षकों से बात करने पर उन्होंने भी यह माना कि जब बच्चे स्वयं अपने सीखने

की गतिविधियों की योजना बनाते हैं और उनकी समीक्षा करते हैं तो उनका व्यवहार अधिक उद्देश्यपूर्ण होता है और वे भाषा व अन्य बौद्धिक क्रियाकलापों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

व्यस्क, बच्चों की भाषा में विशेषण, क्रिया-विशेषण और नए व दुर्लभ शब्द जोड़ कर भाषा को समृद्ध बनाते हैं। साक्षरता के विकास के लिए शब्दावली की समृद्धि एक महत्वपूर्ण घटक है।

योजना और विश्लेषण आगे चलकर सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में भी भूमिका निभाते हैं, उदाहरण के लिए— समस्या सुलझाना एक प्रभावी नीति व क्रिया है जो बच्चों को उनकी भावनाओं का विश्लेषण करने, वैकल्पिक समाधान की योजना बनाने और परिणामों का पूर्वानुमान लगाने और उनके विचारों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

एक अन्य शोध-उदाहरण के अनुसार, इन विचारशील प्रक्रियाओं के अतिरिक्त बच्चे न केवल स्वयं चित्र आदि बनाते हैं, बल्कि दूसरों के द्वारा बनाई गई कलाकृति की प्रशंसा करना भी सीखते हैं। इन सभी तरीकों से छोटे बच्चों में उच्च स्तर के सोच-कौशल का विकास उन्हें कई क्षेत्रों में माहिर होने के लिए तैयार कर सकता है।

रणनीतियों को लागू करने से पहले, यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि योजना और विश्लेषण करने की क्षमता आरंभिक वर्षों के दौरान धीरे-धीरे अभ्यास के साथ विकसित होती है। बच्चों में इस कौशल के विकास के लिए दो सामान्य सिद्धांत दिए गए हैं जो तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चों के लिए इन युक्तियों को लागू करने में आपकी मदद करेंगे।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे तेज़ी से मानसिक छवियाँ बनाने में सक्षम होते हैं, जो उन्हें वस्तुओं, लोगों और घटनाओं को याद रखने में सहायता करती है। तीन वर्ष से छोटे बच्चे मूर्त एवं भौतिक स्तर पर अपने आस-पास की दुनिया को समझते हैं। उन्हें किसी योजना को तैयार करने के लिए सामान को देखने की आवश्यकता हो सकती है या फिर उस व्यवस्था जिससे वे याद कर सकें कि क्या हुआ था। जबकि बड़े बच्चे अपनी बृहद भाषा व संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ वैचारिक स्तर पर कार्य करना शुरू करते हैं। वे सोचने के लिए, सिद्ध करने के लिए और अपने विचारों का विश्लेषण करने के लिए, मौखिक व प्रत्यक्ष वर्णन, जिसमें अमूर्त छवियाँ व मुद्रित शब्द भी सम्मिलित होते हैं इत्यादि पर भरोसा कर सकते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है, उनका योजना और विश्लेषण कौशल विकास होता जाता है। छोटे बच्चे सरल योजना बनाते हैं और अपने अनुभवों को इंगित करते हुए एक या दो मुख्य घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अपना आशय और प्रतिक्रिया इशारों और सक्रिय शब्दावली से व्यक्त करते हैं। बड़े बच्चे बहुखंडित अनुक्रमित योजनाओं को विकसित करते हैं और बहुस्तरीय स्पष्टीकरण और परिकल्पना के साथ अपने अनुसरणों को समृद्ध करते हैं, जैसाकि वे दैनिक आधार पर योजना बनाते हैं और विश्लेषण करते हैं। वे भाषायी और औपचारिक संरचनाओं को विकसित

करते हैं जो उन्हें जटिल विचारों को सूचित करने व साझा करने में मदद देता है।

आप पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में बच्चों का अवलोकन करें और ध्यान दें कि वे इन विकासात्मक निरंतरता में कहाँ हैं और किस स्तर पर हैं और कैसे अधिगम में आगे बढ़ रहे हैं। प्रस्तुत उदाहरणों में खुद की टिप्पणियाँ जोड़कर आप बच्चों के उभरते सोच-कौशल का समर्थन और विस्तार करने में सक्षम होगें। बच्चों के बारे में उनके सर्वांगीण विकास संबंधित अधिक जानकारी के लिए छोटे बच्चों के साथ योजना और विश्लेषण में प्रगति और कार्यनीति के लिए कुछ उदाहरणस्वरूप कार्यनीतियाँ देखें।

दिनभर के कार्यक्रम की योजना नियमित रूप से बनाना

योजना का खाका तैयार करना, कक्षा की एक नियमित गतिविधि होनी चाहिए, ताकि बच्चे अपने आप में यह सोचना शुरू कर दें कि वे क्या करना चाहते हैं और कैसे करना चाहते हैं। यह गतिविधि प्रत्येक दिन एक ही समय पर करें, उदाहरण के लिए— सुबह अभिवादन के बाद, 'मिड-डे-मील' के दौरान या 'बाहरी खेल' के बाद भी आप कर सकते हैं। आप यह क्रिया बच्चों के छोटे समूह, जोड़े बना के या व्यक्तिगत रूप से भी कर सकते हैं। बस सुनिश्चित करें कि प्रत्येक बच्चे को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिले। वास्तव में, बच्चे छोटे समूहों में योजना बनाने से लाभान्वित होते हैं, क्योंकि उनके स्वयं के विचार उन्हें उत्साहित कर सकते हैं। निम्नलिखित उदाहरण में शिक्षिका पाँच-छह बच्चों के समूह के साथ एक मेज़ के इर्द-गिर्द योजना बना रही है—

उदाहरणार्थ

रिया— मैं ब्लॉक क्षेत्र में एक लंबी सड़क बनाने जा रही हूँ।

शिक्षिका— आपने कल भी एक सड़क बनाई थी, जोकि गुड़िया के घर तक बनी हुई थी।

मयंक— वो सड़क मैंने और रिया ने साथ में बनाई थी। आज हम और लंबी सड़क बनाएँगे।

शिक्षिका— ऐसा लगता है कि तुम दोनों आज एक साथ काम करने की योजना बना रहे हो।

पूजा— मैं भी साथ में सड़क बनाने जा रही हूँ।

शिक्षिका— तुम किसके साथ काम करने की योजना बना रही हो?

पूजा— मयंक के साथ।

(शिक्षिका अब दूसरे समूह की ओर जाती है, जो अपने खेल की योजना बना रहे हैं।)

शिक्षिका— चलो तुम तीनों 'ब्लॉक क्षेत्र' में जाकर खेलों को मनपसंद बनाओ।

सरला— चलो, जार में पानी भरें और उस से संगीत की धुन सुनते हैं।

पूजा— पहले पानी को नारंगी रंग का कर लेते हैं। तुम जार लेकर आओ तब तक मैं रंग इसमे मिलाती हूँ।

शिक्षिका— मुझे बताना जब आपके जार संगीत की धुन सुनाने के लिए तैयार हों। मैं भी उन्हें सुनना चाहती हूँ।

(सरला और पूजा कला क्षेत्र और पानी के लिए मेज़ की ओर जाती हैं। शिक्षिका बाकी समूहों की खेल-योजना देखने के लिए आगे बढ़ती हैं और उनकी मदद करती हैं।)

यह केवल उदाहरण मात्र है, आपको एक शिक्षक के नाते बच्चों को उनकी बनाई योजना को तुरंत लागू करने में मदद करनी चाहिए, क्योंकि छोटे बच्चे अक्सर भूल जाते हैं। समूह में सभी बच्चों को पर्याप्त समय देना चाहिए (कुल 10–15 मिनट होने चाहिए) और जब बच्चे योजना बना रहें हों तो उन्हें जल्दी करने के लिए नहीं कहना चाहिए। इस तरह की योजना बनाने के मुख्य घटक हो सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि योजना बनाते समय बच्चे कमरे में उपलब्ध सभी क्षेत्रों व सामग्रियों को देख सकते हैं

योजना बनाने के पहले या उसके दौरान कमरे का व्यापक दौरा करें और उन नई सामग्रियों या चीज़ों को इंगित करें, जिनका बच्चों ने पिछले कुछ समय से प्रयोग नहीं किया है। ऊँची अलमारियों या अन्य ऐसी बाधाओं से बचें जो एक पूर्ण कमरे के दृश्य को अवरूद्ध करते हैं, क्योंकि सब कुछ देख पाने की सक्षमता न केवल नियोजन को बढ़ावा देती है, बल्कि इसका मतलब यह भी है कि बच्चे अपने खेल में विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को भी सम्मिलित करेंगे। जब उन्हें अपनी योजना को पूरा करने में समस्या आएगी तो उन्हें समस्या हल करने के लिए उपलब्ध विकल्पों का बेहतर ज्ञान होगा। यह जानने के बाद कि कमरे में क्या उपलब्ध है, इस अवसर को भी कम करता है कि बच्चे उन गतिविधियों की योजना बनाएँगे जो वे उपलब्ध सामग्री के साथ नहीं कर सकते। यदि वे फिर भी करते हैं, तो यह आपको कुछ कहने का अवसर प्रदान करता है, जैसे— हमारे पास जानवरों के कोई और पजल्स नहीं है। अब क्या हम मैग्जीन से चित्र काटकर गत्ते पर चिपका सकते हैं या कुछ और कर सकते हैं। अब इन चित्रों को तीन-चार टुकड़ों में काटकर पजल्स की तरह उपयोग कर सकते हैं।

बच्चों से प्रश्न करना

जिस प्रकार बड़ों से उस प्रकार के सवाल पूछना समझदारी नहीं होगी जिनका उत्तर वे पहले से जानते हैं, उसी प्रकार बच्चों से बातचीत करने पर भी यह बात लागू होती है। बच्चों की योजनाओं के बारे में वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए, उनसे प्रश्न करें, जैसे कि "आप अपने टॉवर का निर्माण कैसे करेंगे" या यह पूछने के बजाए "कि आप बड़े ब्लॉक का उपयोग करेंगे या बड़े ब्लॉक पर छोटे ब्लॉक रखना ठीक रहेगा या इसका उल्टा"। यह पूछकर आप ज़्यादा जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

बच्चों की योजनाओं को ध्यान से सुनना

बच्चों के साथ वार्तालाप करें और उनके साथ उन्मुक्त चर्चा करें तथा उन्हें निर्देशित न करें। उनके शब्दों और इशारों पर ध्यान देकर, आप उनकी योजनाओं को विस्तार से जान पाएँगे और उनकी अनुमान लगाने और सोचने की क्षमता के बारे में जानेंगे। तब आप उनके विचारों को विस्तृत करने और लागू करने के लिए उपयुक्त विकल्पों पर विचार कर सहायक कार्यनीति को चुन पाएँगे।

बच्चों द्वारा उनकी योजनाओं को व्यक्त करने के सभी तरीकों को स्वीकार व समर्थन करना

कभी भी बच्चों को अपनी योजना को एक निश्चित तरीके से व्यक्त करने के लिए बाध्य न करें। यदि बच्चे इशारे द्वारा व्यक्त करते हैं, जैसे— कोई किताब लाकर देते हैं, तो बच्चों को अपने विचार मौखिक

रूप से व्यक्त करने के लिए ज़ोर न दें। इशारे में बताई गई योजना को स्वीकार करें, लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप सही समझें हैं इसके लिए बच्चे को उपयुक्त शब्दावली भी बताएँ, जिसे वे भविष्य में प्रयोग कर सकें, जब वे उसके लिए तैयार हों, उदाहरण के तौर पर आप कह सकते है, "तुम चाहते हों कि मैं ये किताब, 'घर की खोज' पढ़ूँ"। उनकी किसी योजना को नकारें नहीं और न ही बच्चों को उनकी योजनाओं के लिए विकल्प दें। यह बच्चों को उनकी योजनाओं को व्यक्त करने के पूरे उद्देश्य को ही पराजित करता है। "तुम लोगों ने इस पूरे सप्ताह हर दिन 'घर-घर' ही खेला है, चलो बदलाव के लिए आज 'कला क्षेत्र' में पेंटिग करते हैं", यह बोलने के प्रलोभन से बचें। इसके बजाय देखें कि 'घर-घर' खेलने के क्षेत्र में बच्चों की दिलचस्पी कहाँ हैं और उसे बढ़ाने के तरीकों के बारे में सोचें, जैसे— बच्चे किस तरह की बातचीत करते हैं तथा कौन-सी शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं।

बच्चों को उनकी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताने के लिए प्रोत्साहित करना

योजना के सभी चरणों में बच्चों को अपने विचारों को अधिक विस्तृत करने में सहायता की जा सकती है। शुरुआत में बच्चों के लिए सरल अनुवर्ती 'प्रश्न पूछने' का प्रयास करें, जैसे— आपको यह करने के लिए किस चीज़ की आवश्यकता होगी और बच्चे क्या कर रहे हैं, इस बारे में टिप्पणी से आप अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

छोटे बच्चों को अपने कार्य का विवरण देने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि वे क्या काम कर रहे हैं; वे और क्या कर सकते हैं; वे किस सामग्री का प्रयोग; करें, उनकी गतिविधियों का क्रम क्या होगा और वे किस परिणाम को प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं, उदाहरण के लिए— जब रिंकू ने बताया कि वह अपने परिवार के पालतू कुत्ते का चित्र बनाने जा रही है, तो उसके शिक्षक ने कहा, "क्या तुम उसको सामने देखकर उसका चित्र बना सकती हो?" इस बात के लिए रिंकू ने कुछ कुत्तों की तस्वीर कहानी की किताब में देखी और फिर उसने चित्र बनाने की योजना बनाई।

बच्चों की योजनाओं को क्रम में लिखना

यदि आप बच्चों की योजनाओं को रिकॉर्ड करते हैं तो बच्चों को यह अनुभव होता है कि उनके विचार महत्वपूर्ण व उपयोगी हैं, उदाहरण के लिए— आप किसी चित्र या ट्रेसिंग को लेबल कर सकते हैं, जो किसी बच्चे द्वारा बनाई गई है और वह आगे उसका प्रयोग करने का आशय रखते हैं। उन वार्ताओं को लिखते रहें, जब बच्चे वर्णन कर रहे हों कि वे क्या करेंगे और कैसे करेंगे। योजनाओं पर हर बच्चे का नाम लिखें। बड़े बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे स्वयं अपना नाम व अपने विचार लिखें। प्रलेखन (डॉक्यूमैंटेशन) जिसमें लेखन, चित्र और फोटोग्राफी शामिल है; बच्चों को योजना की प्रक्रिया व उसके महत्व के बारे में अधिक जागरूक बनाने में सहायता करती है। वे अपने विचारों को अधिक विस्तार में सोचने की ज़्यादा संभावना रखते हैं, क्योंकि वे उन्हें औपचारिक रूप से ग्रहण करते हैं। बच्चे अपनी प्रलेखित योजनाओं की समीक्षा भी कर सकते हैं, क्योंकि वे अपने अनुभवों को दर्शातें हैं और वास्तविक

परिणामों के साथ अपने सोचे गए लक्ष्यों की तुलना करते हैं।

प्रशंसा एवं प्रोत्साहन की सार्थक युक्तियों का प्रयोग

यदि आप एक दिन एक बच्चे की योजना को बहुत अच्छा विचार कहते हैं और वही शब्द दूसरे बच्चे को कहना भूल जाते हैं, तो आप अनजाने में दूसरे बच्चे को अपनी अस्वीकृति व्यक्त कर देते हैं। इस तरह की प्रशंसा बच्चों के साथ किए जा रहे वार्तालाप को खत्म कर देती है और बच्चों द्वारा योजनाओं को विस्तार से बताने की संभावना को भी समाप्त कर देती है। इसके बजाय, यहाँ सूचीबद्ध अन्य नीतियों का प्रयोग करें— प्रशंसा में ध्यान से सुनना, प्रश्न पूछना, टिप्पणी देना, योजनाओं को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करना आदि सम्मिलित हैं।

विश्लेषण को बढ़ावा देने के लिए कार्यनीतियाँ

इस लेख का दूसरा प्रमुख बिंदु हैं कि किए गए कार्य का विश्लेषण किस तरीके से किया जाए। विश्लेषण के मुख्य घटक है, योजना को समर्थन देने वाली कई कार्यनीतियों का प्रयोग करना। यह याद रखें कि योजना और विश्लेषण पुनरावृत्ति क्रियाएँ हैं। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करें कि उन्होंने जो किया है उससे प्राप्त जानकारी उन्हें आगे की योजना बनाने में, उसका उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

विश्लेषण को दैनिक कार्यक्रम का ज़रूरी हिस्सा बनाएँ

प्रत्येक दिन, एक निर्धारित समय पर बच्चे छोटे समूह में इकट्ठे हों और बातचीत करें कि उन्होंने क्या किया, क्योंकि यह बेहद आवश्यक है, उदाहरण के लिए— यह स्वतंत्र खेल या गतिविधि क्षेत्रों पर खेलने के बाद, भोजन के दौरान या बाहर जाने के पहले कर सकते हैं। बच्चों द्वारा अपनी नियोजित गतिविधियों को पूरा करने के तुरंत बाद विश्लेषण की अवधि निर्धारित करें। हालाँकि जब भी बच्चे सक्रिय रूप से सीखने में लगे हों, तब आप उनके काम को देख सकते हैं। यहाँ दी गई अन्य कार्यनीतियों का उपयोग करते हुए आप बच्चों को अपने कार्यों के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित करें, जो विश्लेषण को विशेष रूप से प्रासंगिक और सार्थक बनाता है।

खुले उत्तर वाले प्रश्न पूछें

नियोजन के साथ, बच्चे ने क्या किया के बारे में सवाल धैर्य से किया जाना चाहिए और जानकारी ऐसी प्राप्त करनी चाहिए, जो छोटी हो और पहले से उन्हें ज्ञात न हो। खुले उत्तर वाले प्रश्न हो सकते हैं, जैसे कि "क्या हुआ जब आपने तीसरा ब्लॉक जोड़ा?" बच्चे से ज्यादा उत्तर की संभावना होगी, बजाय ये पूछने के कि "क्या आपने एक और ब्लॉक जोड़ा?" वह प्रश्न जो "आपको कैसे पता, आप क्या सोचते हो या आपको क्या लगता है" से शुरू होते हैं, ये प्रश्न बच्चों को अपने पूर्व अनुभवों से पुन: संरचना और अर्थ बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

बच्चे क्या करते हैं और क्या कहते हैं, इसकी विस्तृत व्याख्या करें

वे बच्चे जो अभी ठीक से बोलना नहीं सीख पाए और जिनकी सीमित शब्दावली है वे इशारों से या उपलब्ध सामग्रियों से इंगित कर सकते हैं कि उन्होंने क्या किया है। आप उनके संकेतों को शब्दों से जोड़ सकते हैं और उनके लिए उन शब्दों को दोहराएँ। उनके संदेश को

समझने के लिए, बच्चों द्वारा किए जा रहे, इशारों को उन्हीं के द्वारा सत्यापित कर सकते हैं। आपकी व्याख्या उन्हें भविष्य में विश्लेषण के लिए शब्दावली प्रदान करेगी, उदाहरण के लिए— श्रीमती पाठक जो एक शिक्षक हैं, कक्षा में हो रहे नाटकीय खेल के साथ कुछ वाक्य जोड़ती हैं और बालवाटिका में जाने वाली एक बच्ची श्रेया उसमें सरल शब्दों को जोड़ती है।

उदाहरणार्थ

श्रीमती पाठक— श्रेया, आज आपने स्वतंत्र खेल (फ्री प्ले) में क्या किया?

श्रेया— अपने हाथों द्वारा ब्लॉक क्षेत्र की ओर इशारा करती है।

श्रीमती पाठक— मैंने आपको और रिंकु को ब्लॉक क्षेत्र में खेलते हुए देखा था।

(श्रेया अपने हाथों को ऊँचा उठाती है)

श्रीमती पाठक— अच्छा! क्या आपने एक ऊँचा टावर बनाया है?

श्रेया— अपने हाथों को मेज़ पर पटकती है।

श्रीमती पाठक— क्या टावर नीचे गिर गया? (श्रेया हाँ में सिर हिलाती है) मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों हुआ?

श्रेया— ज्यादा ब्लॉक लगा दिए मैंने।

श्रीमती पाठक— तुमने टावर पर एक और ब्लॉक लगाया था क्या?

श्रेया— सभी ब्लॉक नीचे गिर गए। शायद भारी हो गया था!

श्रीमती पाठक— आपने सबसे ऊपर एक बड़ा ब्लॉक लगाया था, जो बहुत भारी था, इसलिए आपका टावर गिर गया।

जो बच्चे पहले से बोलते हैं, उनको बताने के लिए कि आप सुन रहे हैं, आप अपने शारीरिक हाव-भाव और बातचीत का प्रयोग करें। नई शब्दावली व शब्दों का परिचय बच्चों को दें। उन्हें किसी घटना को दोहराने या अपने ही किए गए किसी कार्य की नकल करने के लिए कहें, ताकि आप एक साथ अनुभव और चर्चा कर सकें, उदाहरण के लिए— शिक्षक (जो बच्चा पेंटिंग कर रहा है, उसके साथ बैठते हैं) तुमने यह छल्ले जैसे निशान कैसे बनाएँ?

बच्चा— मैंने अपनी उँगलियों को पेंट में डुबोया और सब तरफ़ घुमा दिया। मैंने एक बवंडर बनाया है जिसने घर को उड़ा दिया है।

शिक्षक (देखने के लिए झुकते हुए)— यह निश्चित रूप से एक विशाल बवंडर था। इसने पूरे घर को उड़ा दिया, लेकिन यह यहाँ पर ये रंग कैसा है, इसकी सतह खुरदरी क्यों है?

बच्चा— इस जगह से किसी ने घर से बाहर निकलने के लिए खरोंचा था। वह डरी हुई थी। मैंने पेंट करने के बाद नाखून से रगड़ दिया था।

शिक्षक— बवंडर बहुत ही डरावना होता है। आपने यह खरोंच के निशान कैसे बनाए?

बच्चा—मैंने ऐसे किया था। (नाखूनों से प्रदर्शित करता है)

शिक्षक— आपने पेंट में अपने नाखूनों से रेखा खींची। (कागज़ का टुकड़ा लेकर बच्चे की नकल उतारते हैं) क्या आपको अपने नाखूनों के नीचे पेंट मिला? (वे अपने अपने नाखूनों की तुलना करते हैं।)

परस्पर विरोधी दृष्टिकोण को स्वीकारें व उनकी व्याख्या करें

बच्चों के अनुस्मरण और स्पष्टीकरण कभी-कभी एक दूसरे से या बड़ों अथवा व्यस्कों से भिन्न होते हैं। प्रत्येक बच्चे के संस्मरण को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, न कि उन्हें सही करना या किसी का पक्ष लेना। बच्चे को यह सोचने के लिए कि क्या हुआ, कैसे उन्हें ठीक या सही तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित करें, महत्वपूर्ण यह है कि बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें और विचार क्रिया समर्थन के तरीके खोजें, ताकि वह निरंतर इस तरह से कार्य कर सकें।

टिप्पणी दें, जब भी आप बच्चों को खेलते हुए देखते हैं

बच्चे जब किसी गतिविधि में व्यस्त होते हैं, उस समय टिप्पणी देना दो उद्देश्यों की पूर्ति करता है। एक तो यह उन्हें भाग लेने और जो हो रहा है उसका मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, दूसरा और बाद में उस घटना को याद रखना आसान बनाता है।

टिप्पणी जितनी अधिक स्पष्ट एवं विशिष्ट होगी, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि बच्चे उन्हें याद रखेगें और अपनी आगे की गतिविधियों में उनका प्रयोग करेंगे, उदाहरण के लिए— जब रिंकू के देखभालकर्ता ने कहा, "मैंने आपको लेखन क्षेत्र में क्रेयॉन रंगों का प्रयोग करते देखा। आपने बहुत अच्छे क्रेयॉन रंगों को पसंद किया था, बहुत अच्छे रंग भरे थे। तब रिंकू ने विस्तार से बताया, "मैंने अपने दोस्तों को अपनी जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित किया है। मैं निमंत्रण कार्ड बना रही हूँ, मेरी माँ ने मुझे सिखाया है। हम पाँच बच्चे हैं और मैं पाँच साल की हूँ।"

बच्चे क्या कहते हैं, उसे लिखें

बच्चों द्वारा उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करने वाली टिप्पणियों को रिकॉर्ड करना, उन्हें बताता है कि उनके विचार भी संरक्षित करने लायक हैं। आप उनके चित्र को लेबल कर सकते हैं या उन्हीं के शब्दों में लिख सकते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। बड़े बच्चों को पत्र और विशेष टिप्पणियाँ लिखने के लिए प्रोत्साहित करें, जोकि उनके अनुभवों और उन्होंने क्या सीखा और सोचा, इसे प्रस्तुत करें। लिखित सामग्री, चित्र, तस्वीरें अन्य प्रलेखन आदि को आप और बच्चे उनके परिवारों से साझा कर सकते हैं। इससे उनकी स्कूली तैयारी के बारे में आपको पता चलता है।

बच्चों की योजनाओं और गतिविधियों को उनके विश्लेषणों के साथ संयोजित करने में सहायता करना

बच्चों को उनके वास्तविक व्यवहार में उनके विचारों को याद करने में मदद करने से, उन्हें अपने कार्यों के बारे में गुणकारिता और ज़िम्मेदारी की भावना स्थापित करने में मदद मिलती है। आप कह सकते हैं, "मुझे याद है कि तुमने कहानी में राजा का मुकुट बनाने की योजना बनाई थी। क्या आपने वह बनाया?" लक्ष्य यह नहीं है कि बच्चों को उनकी योजनाओं को पूरा न करने के लिए जवाबदेह ठहराया जाए, योजनाओं में बदलाव पूरी तरह स्वीकार्य है, बल्कि यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाए कि उनकी योजना को अमल करने के लिए कि उनके कार्य हुए या नहीं। यदि नहीं, तो क्यों और कैसे नहीं हुए। यदि बच्चे अपनी योजनाएँ बदल रहे हैं, किसी नई दिशा में जा रहे हैं या

पूरी तरह मूल विचार छोड़ रहे हैं, तो आप उनसे पूछ सकते हैं, "आपने यह अलग योजना क्यों बनाई?" या "आपने इसके बजाय क्या करने के बारे में सोचा है?" फिर से, यहाँ इरादा उन्हें एक ही विचार से जुड़े रहने के लिए मजबूर करना नहीं है, बल्कि उन्हें अपने विकल्पों और समस्याओं को सुलझाने की नीतियों के बारे में विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे अगले दिन भी अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाएँ

जब बच्चे अपने अनुभवों पर विचार करते हैं, उन समस्याओं को याद करते हैं, जिनका उन्होंने सामना किया था या आकस्मिक परिणाम और बदलाव जिनका उन्होंने अनुमान भी नहीं लगाया था। यह विश्लेषण उन्हें एक आदर्श अवसर प्रदान करता है, जिसमें वे अपने अगले दिन की योजनाओं का अलग-अलग समाधान निकालने के नए तरीकों को खोज सकते हैं।

आप बच्चों को इन विश्लेषणों का उपयोग भविष्य की योजनाओं में करने के लिए कई तरीकों से प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक नोट लिखें या बच्चे को नोट लिखने के लिए कहें, जो उन्हें चेताने के लिए प्रयोग हो सके। बच्चे के सामान रखने के स्थान के संबंधित क्षेत्र में एक वस्तु रखें। एक साईन बोर्ड बनाएँ "कार्य प्रगति पर है"। जब बच्चे कला या किसी अन्य निर्माण परियोजना पर कार्यरत होते हैं तो यह साइन बोर्ड, दूसरे व्यक्ति को अधूरे काम न छूनें के लिए सचेत करता है। यह एक दृश्य की स्मृति सहायक रूप में काम करता है, जब बच्चे अगले दिन की योजना बनाते हैं। अंत में यह बच्चों को उनके द्वारा पहले से किए गए कार्यों और उन्हें विस्तृत व जटिल कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आप सभी गतिविधि क्षेत्रों को लेबल करें, जिससे बच्चों को चयन करने में आसानी हो। यह उनकी बुनियादी साक्षरता को भी सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

- बच्चों को नियोजन व विश्लेषण कार्यों में व्यस्त करना आवश्यक है। जिससे वे मूक-दर्शक नहीं होंगे। यह प्रक्रिया उन्हें कलाकार, वैज्ञानिक अथवा उनकी क्षमताओं का पूरा विकास कर पाने में सार्थक साबित होंगी। बच्चे चीज़ों का आविष्कार करते हैं और अपने व दूसरों के लिए नए मायने खोजते हैं। जैसे ही आप यहाँ बताई गई नीतियों को कार्यान्वित करेंगे, आपको पता चलेगा कि बच्चों की योजनाओं व विश्लेषणों की जटिलता का संबंध उनके खेल-खेल में सीखने के विकास से होता है।
- छोटे बच्चे सरल तरीके से कम समय के लिए खेलते हैं जैसे-जैसे स्कूल का सत्र आगे बढ़ता है, बच्चे खेल में ज्यादा विस्तृत व विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करने लगते हैं, उनकी भाषा अथवा शब्दावली विकसित होती है और बच्चों के साथ सामाजिक संबंध भी अधिक समय के लिए बनते हैं और उनके बाद में फिर से शुरू होने की भी अधिक संभावना रहती है। इसी तरह बच्चों की योजनाएँ उनके इरादों की बढ़ती गहराई और सीमा को दर्शाती है। वास्तव में कभी-कभी बच्चे जो करने का इरादा रखते हैं,

उसकी कहानी बता देना भी उतना ही संतोषजनक होता है जितना उसे यथार्थ में पूरा करना।

- इसी तरह खेल के दौरान बच्चों की याद रखने और समझने की क्षमता बढ़ती है। उनके द्वारा लगाई जाने वाली अटकलें केवल कक्षा में हुई घटनाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उससे संबंधित घटनाएँ लोगों व अन्य परिस्थितियों तक बढ़ सकती हैं। इन परिवर्तनों को देखने या उन पर नज़र रखने से शिक्षक को एक परिप्रेक्ष्य मिलता है कि बच्चे अपने परिवेश के बारे में क्या सोचते हैं तथा वह उनकी क्रियाओं और अतीत व वर्तमान के निहितार्थ उनके व्यवहार पर क्या प्रभाव डालता है।
- यहाँ प्रस्तुत उदाहरण दर्शाते हैं कि योजना और विश्लेषण छोटे बच्चों में सोच कौशल को विकसित करने के लिए अत्यधिक प्रभावी तंत्र है। योजना चुनाव करने के साथ-साथ काम करने की इच्छा होने का भी है। योजना और विश्लेषण में निर्णय लेना और समस्या को हल करना शामिल है। वे बच्चों को अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए, अपने परिवेश पर नियंत्रण की भावना और बदलने की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जैसे— बच्चे योजना बनाते हैं और अपने अनुभवों की समीक्षा करते हैं। वे अपने पूर्वानुमानों और विश्लेषण क्षमता को बढ़ाते हैं, स्व-नियामक तंत्रों का उपयोग और खुद व अन्यों के लिए ज़िम्मेदारी की भावना और दिए गए विकल्पों का विकास करते हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करके हम छोटे बच्चों को उस सोच-कौशल से लैस कर सकते हैं, जिसकी बाद में उन्हें स्कूली शिक्षा व व्यस्क जीवन में आवश्यकता होगी।

संदर्भ

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा नीति (ई.सी.सी.ई.)*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (बुनियादी स्तर) 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.